शालागामी आदिवासी बालक एवं बालिकाओं में स्वास्थ्य एवं पोषण स्थिति का मूल्याकंन अध्ययन

प्रतिवेदन

मार्गदर्शन
अशीष कुमार भट्ट (आई.एफ.एस.)
संचालक

निर्देशन
डी.पी.नागेश
उप संचालक

-:- संकलन एवं लेखन कार्य -:-
निलेश कुमार सोनी
अनुसंधान सहायक

आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान,
क्षेत्रीय इकाई अम्बिकापुर-सरगुजा छ0ग0

अनुक्रमाणिका

क्र.	अध्याय	विवरण	पृ.क्र. से	तक
1	अध्याय - एक	प्रस्तावना	1	2
2	अध्याय - दो	छत्तीसगढ़ परिचय एवं नामकरण	3	5
3	अध्याय - तीन	क्षेत्र परिचय	6	8
4	अध्याय - चार	सामाजिक स्वास्थ्य स्थिति	9	26
5	अध्याय - पांच	निष्कर्ष एवं सुझाव	27	32
		सुझाव	33	34

अध्याय – एक
प्रस्तावना

किसी भी समाज के विकास के लिए समाज में रहने वाले व्यक्तियों का स्वस्थ्य महत्वपूर्ण कारक है। क्योकि स्वास्थ एवं पोषण का प्रभाव उनकी कार्यक्षमता पर पड़ता है।

भारत सरकार तथा राज्य सरकार द्वारा ग्रामीण एवं शहरी बच्चों के स्वास्थ्य एवं पोषण कि स्थिति को ध्यान में रखते हुए शाला स्तर पर अनेक शासकीय योजनाएं संचालित है, जैसे :– मध्यान भोजन, टीकाकरण, स्वास्थ्य परीक्षण, इन सबके बावजूद सरगुजा जैसे अनुसूचित क्षेत्र/जनजातिय बाहुल्य क्षेत्र में आज भी अधिकांश बच्चे कुपोषण के शिकार है। जिसका सीधा प्रभाव बच्चों की शिक्षा पर पड़ता है, क्योकि स्वास्थ्य तन में ही स्वास्थ्य मन होता है। बच्चों का तन एवं मन स्वास्थ्य होगा तभी तो बच्चों का सम्पूर्ण बौद्धिक विकास होगा।

सरगुजा अंचल की बच्चों की स्वास्थ्य एवं पोषण स्थिति ठीक नहीं होने के कारण जनजाति बच्चें अपनी शिक्षा पूर्ण नहीं कर पाते है। अतः प्रस्तुत अनुसंधान अध्ययन अकादमिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा जिला के विकासखण्ड अम्बिकापुर के विभिन्न शालाओं में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति बालक/बालिका का स्वास्थ्य एवं पोषण स्थिति का अध्ययन विषयक अध्ययन आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान क्षेत्रीय इकाई अम्बिकापुर द्वारा पूर्ण किया गया है।

उद्देश्य :–

1. कक्षा पहली से बारहवीं तक अनुसूचित ज़नजाति छात्र – छात्राओं के स्वास्थ्य एवं पोषण स्थिति का अध्ययन करना।
2. शालागामी आदिवासी बालक/बालिकाओं के अध्ययनरत पाठशाला में स्वास्थ्य एवं पोषण हेतु उपलब्ध सुविधाओं का अध्ययन करना।
3. शालागामी आदिवासी बालक बालिकाओं के स्वास्थ्य एवं पोषण में सुधार हेतु आवश्यक सुझाव देना।

1.3 **महत्व :–**

प्रस्तुत अध्ययन कक्षा पहली से बारहवीं तक शालागामी अनुसूचित जनजाति बालक/बालिका के स्वास्थ्य एवं पोषण व अध्ययनरत पाठशाला में स्वास्थ्य एवं पोषण हेतु उपलब्ध सुविधाओं की वास्तविक स्थिति व कारणों को जानने में सहायक सिद्ध होगा। जनजातिय क्षेत्र में स्वास्थ्य एवं पोषण की खराब स्थिति को रोकने हेतु जारी प्रयासों की स्थिति स्पष्ट होगी।

1.4 **अध्ययन की सीमाः–**

कक्षा पहली से 12वीं तक अनुसूचित जनजाति छात्र/छात्राओं के स्वास्थ्य एवं पोषण स्थिति के अध्ययन हेतु सरगुजा जिले के चयनित विकासखण्ड के अंतर्गत आने वाले 12 प्राथमिक, माध्यमिक, हाई स्कूल एवं उच्चतर माध्यमिक शालाओं में अध्ययनरत अदिवासी बालक/बालिकाओं पर व अध्ययनरत शाला में स्वास्थ्य एवं पोषण हेतु उपलब्ध सुविधाओं पर यह अध्ययन किया गया है।

अध्ययन प्रविधि :–

कक्षा पहली से बारहवीं तक शालागामी आदिवासी बालक/बालिकाओं के स्वास्थ्य एवं पोषण व पाठशाला में उपलब्ध सुविधाओं के अध्ययन हेतु सरगुजा जिले के अम्बिकापुर विकासखण्ड में से दैव निदर्शन विधि द्वारा दो प्राथमिक शाला क्रमशः धनगवां, बांकीपुर व पांच पूर्व माध्यमिक शाला क्रमशः देवगढ़, किशुनपुर, घघरी, परसोडीखुर्द, सोनपुरकला व तीन शासकीय हाई स्कूल क्रमशः खलिबा, कर्रा एवं असोला व दो शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला क्रमशः कतकालो एवं सरगवां का चयन किया गया है। जनजाति क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य व पोषण का महत्व तथा प्रभाव के बारे में जागरूकता का अभाव है, फिर भी आशा करते है, कि हमारे अध्ययन से शालागामी आदिवासी बालक/बालिकाओं की स्वास्थ्य एवं पोषण की वास्तविक स्थिति का पता चलेगा।

अध्याय – दो
छत्तीसगढ़ परिचय एवं नामकरण

परिचय :–

प्राचीन काल में इस क्षेत्र को दक्षिण कोशल के नाम से जाना जाता था। इस क्षेत्र का उल्लेख 'रामायण और महाभारत' में भी मिलता है। 6वीं और 12वीं शताब्दियों के बीच शरमपुरीय, पाण्डुवंशी, नागवंशी और सोमवंशी शासकों ने इस क्षेत्र पर शासन किया। कल्चुरियों नें इस क्षेत्र पर वर्ष 875 ई. से लेकर 1741 ई. तक राज किया। 1741 ई. से 1854 ई. तक यह क्षेत्र मराठों के शासनाधीन रहा। वर्ष 1854 ई. में अंग्रेजों के आक्रमण के बाद ब्रिटिश शासन काल में राजधानी रतनगढ़ के बजाय रायपुर का महत्व बढ़ गया वर्ष 1905 ई. में सम्बलपुर बंगाल में चला गया और सरगुजा बंगाल से छत्तीसगढ़ के पास आ गया। 1 नवम्बर 2000 ई. को म.प्र. को विभाजित कर पृथक छ.ग. राज्य का निर्माण किया गया, यह राज्य भारत संघ के 26 वें राज्य में स्थापित हुआ।

नामकरण :– छ.ग. राज्य के नामकरण के संबंध में कई तरह के मत मिलते है :–

1. ब्रिटिश इतिहासकार जे.बी.बेम्लर के मतानुसार इस क्षेत्र का वास्तविक नाम छत्तीसघर था न कि छत्तीसगढ़। जरासंध के राज्य (क्षेत्र) के दक्षिण की ओर छत्तीस दलित (चर्मकार) परिवारों ने जिस क्षेत्र को बसाय उसे छत्तीसघर कहा गया, जो कालांतर में विकृत होकर छत्तीसगढ़ बन गया।

2. कई इतिहासकारों के अनुसार छ.ग. चेदिसगढ़ (चेदियों का राजनीतिक केन्द्र) से बिगडकर बना है।

3. अधिकांश इतिहासकारों की मान्यता है कि कल्चुरि/हैहयबंसी राजपूत साम्राज्य के समय में इस क्षेत्र में छत्तीसगढ़ (दुर्ग) राज्य के रतनपुर शाखा के अंतर्गत 18 गढ़ एवं रायपुर शाखा के अंतगत 18 गढ़ थे। इसलिए इस क्षेत्र का नाम छ.ग. पड़ा। गढ़ों के आधार पर हुआ (छ.ग.) नामकरण सर्वाधिक मान्यता प्राप्त मत है।

स्थिति एवं विस्तारः–

छत्तीसगढ़ राज्य भारत के प्राय द्वीपीय पठार के उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित है। यह म.प्र. के दक्षिण–पूर्व में 46 उत्तरी अक्षांश से 24 5 उत्तरी अक्षांश तथा 80 15 पूर्वी देशांतर से 84 20 पूर्वी देशांतर रेखाओं के मध्य स्थित है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 135191 वर्ग किलोमीटर है। यह भारत के कुल क्षेत्रफल का 4.11 प्रतिशत है। कुल भौगोलिक क्षेत्रफल की दृष्टि से यह देश का 10 वां बड़ा राज्य है।

1 नवम्बर 2000 को अस्तित्व में आए भारत के 26 वें नवोदित राज्य छ.ग. में मूलतः 16 जिले थे। वर्तमान समय में राज्य में जिलों की कुल संख्या 27 है। ये जिले है :– बस्तर, बिलासपुर, बीजापुर, दुर्ग, दंतेवाड़ा, धमतरी, जशपुर, जांजगीर–चांपा, कांकेर, कोरबा, कोरिया, कबीरधाम, महासमुंद, नारायणपुर, राजनांदगांव, रायगढ़, रायपुर, सरगुजा, बालोद, गरियाबंद, मुंगेली, बेमेतरा, सुकमा, बलरामपुर, सूरजपुर, बलौदा बाजार एवं कोण्डागांव।

राज्य के ये 27 जिले 5 संभाग (बस्तर, बिलासपुर, सरगुजा, रायपुर एवं दुर्ग)के अंतर्गत आते है।

- जनसंख्या :– सन् 2011 की जनगणना के अंतिम आंकड़ो के अनुसार छ.ग. का कुल जनसंख्या 25545198 है। जो देश की कुल जनसंख्या का 2.11 प्रतिशत है।
- जनसंख्या घनत्व :– सन् 2011 की जनगणना के अंतिम आंकड़ो के अनुसार छ.ग. का जनसंख्या घनत्व 189 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है।
- जनसंख्या वृद्धि दर :– सन् 2011 की जनगणना के अंतिम आंकड़ो के अनुसार छ.ग. की दसकीय जनसंख्या वृद्धि दर 22.6 प्रतिशत है।
- लिंगानुपात – लिंगानुपात महिलाओं एवं पुरूषों के पारस्परिक अनुपात को प्रदर्शित करता है। सन् 2011 की जनगणना के अंतिम आंकड़ो के अनुसार राज्य में प्रति 1000 पुरूषों पर 991 महिलाएं है।

- साक्षरता :– वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार छ.ग. की सम्पूर्ण साक्षरता 70.3 प्रतिशत है। राज्य में पुरूषों की साक्षरता 80.30 प्रतिशत तथा महिलाओं की साक्षरता 60.2 प्रतिशत है।
- नगरीकरण :– नगरीकरण से तात्पर्य कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या के अनुपात से है। छ.ग. की जनसंख्या ग्रामीण एवं नगरीय दोनों ही क्षेत्रों में वितरित है। 2011 के नवीनतम जनगणना के अनुसार राज्य की नगरीय जनसंख्या 5937237 है। यह नगरीय जनसंख्या राज्य के कुल जनसंख्या का 23.2 प्रतिशत है।
- अनुसूचित जाति :– छ.ग. राज्य में कुल 43 अनुसूचित जातियां निवास करती है। 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य में अनुसूचित जाति की कुल जनसंख्या 3274269 है। जो राज्य की कुल जनसंख्या का 12.8 प्रतिशत है।
- अनुसूचित जनजाति :– छ.ग. राज्य में 42 अनुसूचित जनजातियां रहती है। 2011 की जनगणना के अंतिम रिपोर्ट के अनुसार राज्य में अनुसूचित जनजाति की कुल आबादी 7822902 है जो राज्य की कुल जनसंख्या का 30.6 प्रतिशत है।

अध्याय – तीन
क्षेत्र परिचय

परिचय एवं नामकरण :–

सरगुजा जिला छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तर दिशा में स्थित है। सरगुजा भौगोलिक दृष्टिकोण से राज्य का एक बड़ा जिला है। भौगोलिक जिले के उत्तर दिशा में बलरामपुर जिला, दक्षिण में कोरबा जिला व पूर्व में रायगढ़ व जशपुर जिला तथा पश्चिम में सूरजपुर जिला स्थित है। सरगुजा जिले में सरगुजा नाम का न कोई स्थान है, और न ही कोई गांव सरगुजा सम्पूर्ण अंचल (भू–भाग) का रियासत है। जिसका जिला मुख्यालय अम्बिकापुर है। सम्भवतः अम्बिकापुर का नामकरण यहां के तात्कालीन महाराजा अम्बिकेशवर शरण सिंह देव जी के नाम पर पड़ा हो। सन् 1947 में देश स्वतंत्र होने पर यहां तीन रियासतें थी जो इस प्रकार है :– 1. चांग भखार – जनकपुर

2. कोरिया – बैकुण्ठपुर

3. सरगुजा – अम्बिकापुर

इन तीनों को पुनर्गठित कर सरगुजा संभाग का नामकरण हुआ होगा। अब यह पुनः 4 भागों में विभाजित किया गया है।

1. पूर्वी सरगुजा – सरगुजा जिला मुख्यालय अम्बिकापुर
2. सूरजपुर – जिला मुख्यालय सूरजपुर (गठन 19 जनवरी 2012)
3. बलरामपुर – जिला मुख्यालय बलरामपुर (गठन 17 जनवरी 2012)
4. पश्चिमी सरगुजा – जिला कोरिया मुख्यालय बैकुण्ठपुर, पश्चिमी सरगुजा जिले का गठन 25 मई 1998 से माना गया।

1. सन् 2008 में सरगुजा संभाग का दर्ज प्रदान कर 5 जिलों को इस संभाग के अंतर्गत शामिल किया गया है। जो क्रमश : सरगुजा, बलरामपुर, सूरजपुर, कोरिया एवं जशपुर।
2. जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल – सरगुजा जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 3751.04 वर्ग किमी. है।

3. सरगुजा जिला की जनसंख्या :— सन् 2011 की जनगणना के अंतिम आंकड़ो के अनुसार सरगुजा जिले की कुल जनसंख्या 840352 है। जिसमें पुरूषों की जनसंख्या 424492 व स्त्री जनसंख्या 415860 है, तथा कुल जनसंख्या में ग्रामीण जनसंख्या 703650 व शहरी जनसंख्या 136702 है।

4. जनसंख्या वृद्धि दर — सन् 2011 की जनगणना के अंतिम आंकड़ों के अनुसार सरगुजा जिला की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर (2001—2011) में 17.87 प्रतिशत है।

5. जनसंख्या अनुपात :— लिंगानुपात महिलाआं एवं पुरूषों के पारस्परिक अनुपात को प्रदर्शित करता है। सन् 2011 की जनगणना के अंतिम आंकड़ों के अनुसार सरगुजा जिला में प्रति 1000 पुरूषों पर 980 महिलाएं है।

6. साक्षरता :— वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार सरगुजा जिला की साक्षर जनसंख्या 434735 है। साक्षरता प्रतिशत 60.86 प्रतिशत है। जिसमें पुरूष साक्षर जनसंख्या 250935 है। साक्षरता प्रतिशत 69.65 प्रतिशत है व स्त्री साक्षर जनसंख्या 183800 है, जिसका साक्षर प्रतिशत 51.92 प्रतिशत है।

7. अनुसूचित जाति :— सरगुजा जिला मे चमार, मोची, सतनामी, आदि अनुसूचित जातिया निवास करती है। जिसकी कुल जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 40090 है। जिले की कुल जनसंख्या में 4.77 प्रतिशत है।

8. अनुसूचित जनजातियां :— छत्तीसगढ़ की जनजातियों का क्षेत्रीय वर्गीकरण तीन क्षेत्रों में निवास के आधार पर की गई। सरगुजा जिले में निवासरत जनजातियों को उत्तरी आदिवासी क्षेत्र के अंतर्गत रखा गया है जो निम्न है :— पण्डो, कोरवा, नगेसिया, गोंड, उरांव कोल तथा कंवर, बियार, कोडाकू आदि।

सरगुजा जिले में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या (2011) की जनगणना के अनुसार 482007 जो कि जिले की कुल जनसंख्या का 57.36 प्रतिशत है।

9. ग्राम :— सरगुजा जिला में कुल राजस्व ग्राम 579 है, वन ग्राम निंरक है व ग्राम पंचायतों की संख्या 379 है।

10. विकासखण्ड :— सरगुजा जिले में विकासखण्डों की कुल संख्या 07 है। जो क्रमश : अम्बिकापुर, लखनपुर, उदयपुर, लुण्ड्रा व मैनपाट है।

11. तहसील :– सरगुजा जिले में : तहसीलों की संख्या 7 है **जो क्रमशः सीतापुर** अम्बिकापुर, लखनपुर, उदयपुर, लुण्ड्रा, बतौली तथा मैनपाट है।

12. अनुभाग :– सरगुजा जिला को तीन अनुभाग में बांटा गया है। **1. सीतापुर 2. अम्बिकापुर 3. उदयपुर।**

अध्याय – चार
सामाजिक स्वास्थ्य स्थिति

किसी भी समाज का भविष्य उसके वर्तमान पर निर्भर करता है। अगर वर्तमान में बालक–बालिकाओं को संतुलित पोषण मिले तभी उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा। स्वस्थ्य तन–मन अच्छी शिक्षा को बढ़ावा देता है। संतुलित आहार से ही कुपोषण को दूर रखा जा सकता है। कुपोषण भविष्य की पीढ़ी को कमजोर बना सकता है। किसी भी देश की वर्तमान पीढ़ी कुपोषित रह जाये तो उस देश का भविष्य कमजोर हो जायेगा। समाज के सक्षम परिवार के बालक–बालिकाओं को तो संतुलित आहार परिवार में मिल जाता है। लेकिन आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बालक–बालिकाओं को इससे वंचित रहना पडता है। ऐसा ही एक कमजोर वर्ग अनुसूचित क्षेत्रों में निवासरत करता है। जिसे हम अनुसूचित जनजाति कहते है। अनुसूचित जनजाति बालक–बालिकाओं को कुपोषण से बचाने के लिए एवं स्वास्थ्य में सुधार हेतु शासन स्तर से विभिन्न योजनायें विद्यालयों में संचालित की जा रही है।

सरगुजा जिले के अम्बिकापुर विकासखण्ड के 2 प्राथमिक शाला, 5 शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, 3 हाई स्कूल तथा 2 शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला के कुल 527 शालागामी आदिवासी बालक/बालिकाओं का चयन कर स्वास्थ्य एवं पोषण की स्थिति का मूल्यांकन अध्ययन कार्य किया गया।

स्वास्थ्य स्थिति

4. शालागामी छात्र/छात्राओं में ऊंचाई के अनुपात में बजन का विवरण :–

क्र.	शाला का नाम	उचाई के अनुपात में वजन						कुल	
		कम	प्रति.	अधिक	प्रति.	सामान्य	प्रति.	विद्यार्थी	प्रति.
1	प्राथमिक शाला	8	14. 81%	1	1. 85%	45	83. 34%	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	21	12.65%	3	1.81%	142	85.54%	166	100.00%
3	हाई स्कूल	22	9.02%	1	0.40%	221	90-57%	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	6	9.52%	0	–	57	90.48%	63	100.00%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि ऊंचाई के अनुपात में प्राथमिक शाला के 83.34% बालक/बालिकाएं सामान्य पाये गये। 14.81% कम तथा 01.85% अधिक पाये गये। माध्यमिक शाला में 12.65% कम तथा 1.81% अधिक पाये गये। हाई स्कूल में 10.96% तथा 0.68% अधिक पाये गये। उच्चतर माध्यमिक में 9.52% ऊंचाई के अनुपात में बजन में कम पाये गये।

5. शालागामी छात्र/छात्राओं के द्वारा दांतो की प्रतिदिन सफाई का विवरण :–

क्र.	शाला का नाम	दांतो की प्रतिदिन की सफाई				कुल विद्यार्थी	प्रति.
		हां	प्रति.	नहीं	प्रति.		
1	प्राथमिक शाला	54	100%	0	–	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	165	99.40%	1	0.60%	166	100.00%
3	हाई स्कूल	244	100.00%	0	–	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	63	100.00%	0	–	63	100.00%

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि प्राथिकम शाला के 100 % बालक/बालिका दांतो की प्रतिदिन सफाई करते है। माध्यमिक शाला में 99.40% प्रतिदिन, दांतो की सफाई करते है। जब 0.06% प्रतिदनि दांतो की सफाई नहीं करते है। हाई स्कूल एवं उच्चतर माध्यमिक शाला के 100% बालक/बालिका प्रतिदिन दांतो की सफाई करते है।

6. शालागामी छात्र/छात्राओं के प्रतिदिन स्नान का विवरण का विवरण :—

क्र.	शाला का नाम	प्रतिदिन स्नान				कुल विद्यार्थी	प्रति.
		हां	प्रति.	नहीं	प्रति.		
1	प्राथमिक शाला	49	90. 74%	5	9. 26%	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	160	96.39%	6	3.61%	166	100.00%
3	हाई स्कूल	244	100.00%	0	—	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	63	100.00%	0	—	63	100.00%

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि प्राथमिक शाला के 90.74% प्रतिदिन स्नान करते है एवं 9.26% बालक/बालिका प्रतिदिन स्नान नहीं करते है। माध्यमिक शाला 96.39% प्रतिदिन स्नान करते है, 0.60% नहीं करते है। हाई स्कूल तथा उच्चतर माध्यमिक शाला के 100% बालक/बालिका प्रतिदिन स्नान करते है।

7. शालागामी छात्र/छात्राओं के साप्ताहिक नाखून का विवरण:—

क्र.	शाला का नाम	साप्ताहिक नाखून काटना				कुल विद्यार्थी	प्रति.
		हां	प्रति.	नहीं	प्रति.		
1	प्राथमिक शाला	43	79. 65%	11	20.37%	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	134	80. 72%	32	19.28%	166	100.00%
3	हाई स्कूल	234	95.90%	10	4.10%	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	62	98.41%	1	1.59%	63	100.00%

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि प्राथमिक शाला के 79.65% बालक/बालिका सप्ताह में नाखून काटते है एवं 20.37% नहीं काटते, माध्यमिक शाला में 80.72% सप्ताह में नाखून काटते है, 19.28% नहीं काटते है। हाई स्कूल के 95.90% काटते है एवं 4.10% नहीं काटते है। उच्चतर माध्यमिक शाला के 98.41% बालक/बालिका सप्ताह में नाखून काटते है 1.59% नहीं काटते है।

8. शालागामी छात्र/छात्राएं नाखून किससे काटते है का विवरण :–

क्र.	शाला का नाम	नाखून किससे कांटते है						कुल	
		नेल कटर	प्रति.	रेजर	प्रति.	दांतो से	प्रति.	विद्यार्थी	प्रति.
1	प्राथमिक शाला	6	11. 11%	48	88. 89%	—	—	54	100.00%
3	माध्यमिक शाला	134	80.72%	31	18.68%	1	0.60%	166	100.00%
2	हाई स्कूल	169	69.26%	75	30.74%	0	—	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	56	88.89%	7	11.11%	0	—	63	100.00%

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राथमिक शाला के 11.11% बालक/बालिका नेल कटर से 88.89% रेजर से नाखून काटते है। जबकि दांतो का उपयोग कोई नहीं करता है। माध्यमिक शाला में 80.72% नेलकटर, 18.66% रेजर, 0.60% दांतो से नाखून काटते है। हाई स्कूल में 69.26% नेलकटर, 30.74% रेजर जबकि दांतो का उपयोग कोई भी नहीं करता। उच्चतर माध्यमिक शाला में 88.89% नेलकटर, 11.11% रेजर से जबकि दांतो का उपयोग कोई नहीं करता है।

9. शालागामी छात्र/छात्राओं के बालों की सफाई का विवरण :–

क्र	शाला का नाम	बालो की सफाई						कुल विद्यार्थी	प्रति.
		प्रतिदिन	प्रति.	साप्ताहिक	प्रति.	कभी/ कभी	प्रति.		
1	प्राथमिक शाला	36	66.67%	17	31.48%	1	1. 85%	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	87	52.41%	74	44.58%	5	3. 01%	166	100.00%
3	हाई स्कूल	117	47.95%	120	49.18%	7	2.87%	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	37	58.73%	26	41.27%	0	—	63	100.00%

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राथमिक शाला के बालक/बालिका में से 66.67% प्रतिदन, 31.48% साप्ताहिक तथा 1.85% कभी–कभी बालो की सफाई करते है। माध्यमिक शाला में से 52.41% प्रतिदिन, 44.58% साप्ताहिक तथा 3.01% कभी–कभी बाल साफ करते है। हाई स्कूल में से 47.95% प्रतिदिन, 49.18% साप्ताहिक तथा 2.87% कभी–कभी बाल साफ करते है। उच्चतर माध्यमिक शाला में से 58.73% प्रतिदिन, 41.27% साप्ताहिक बालों की सफाई करते है।

10. शालागामी छात्र/छात्राओं के खाना खाने के बाद कुल्ला करने का विवरण :–

क्र.	शाला का नाम	खाना खाने के बाद कुल्ला करना				कुल विद्यार्थी	प्रति.
		हां	प्रति.	नहीं	प्रति.		
1	प्राथमिक शाला	54	100%	0	–	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	160	96.39%	6	3.61%	166	100.00%
3	हाई स्कूल	236	96.72%	8	3.28%	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	63	100.00%	0	–	63	100.00%

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राथमिक शाला में 100% बालक/बालिका खाना खाने के बाद कुल्ला करते है। माध्यमिक शाला में 96.39% खाना खाने के बाद कुल्ला करते है। वहीं 3.61% नहीं करते है। हाई स्कूल में **96.72%** कुल्ला करते है, **3.28% नहीं करते है।** उच्चतर माध्यमिक शाला में 100% बालक/बालिका खाना खाने के बाद कुला करते है।

11. शालागामी छात्र/छात्राओं के खाना खाने के पहले हाथ धोना का विवरण :–

क्र.	शाला का नाम	खाने के पहले हाथ धोना				कुल विद्यार्थी	प्रति.
		हां	प्रति.	नहीं	प्रति.		
1	प्राथमिक शाला	54	100%	0	–	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	164	98.80%	2	1.20%	166	100.00%
3	हाई स्कूल	244	100.00%	0	–	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	63	100.00%	0	–	63	100.00%

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राथमिक शाला में 100% बालक/बालिका खाना खाने के पहले हाथ धोते है। माध्यमिक शाला में 98.80% बालक/बालिका खाने के पहले हाथ धोते है तथा 1.20% नहीं धोते। हाई स्कूल तथा उच्चतर माध्यमिक शाला के 100% बालक/बालिका खाने के पहले हाथ धोते है।

12. शालागामी छात्र/छात्राओं के खाना–खाने के पहले किससे धोते है का विवरण :–

क्र.	शाला का नाम	खाना खाने के पहले हाथ किससे धोते है						कुल विद्यार्थी	प्रति.
		साबुन	प्रति.	राख	प्रति.	पानी	प्रति.		
1	प्राथमिक शाला	37	68. 52%	–	–	17	31. 48%	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	144	86.75%	17	10.24%	5	3.01%	166	100.00%
3	हाई स्कूल	235	96.31%	5	2.05%	4	1.64%	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	57	90.48%	4	6.35%	2	3.17%	63	100.00%

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राथमिक शाला में 68.52% साबून, 31.48% पानी से खाने से पहले हाथ धोते है। माध्यमिक शाला में 86.75% साबुन, 10.24% राख तथा 3.01% पानी से हाथ धोते है। हाई स्कूल में 96.31% साबून, 2.05% राख, 1.64% पानी से हाथ धोते है। उच्चतर माध्यमिक शाला में 90.48% साबून, 6.35% राख तथा 3.17% पानी से खाने के पहले हाथ धोते है।

13. शालागामी छात्र/छात्राओं के शौच के बाद हाथ धोने का विवरण :–

क्र.	शाला का नाम	शौच के बाद हाथ धोना				कुल विद्यार्थी	प्रति.
		हां	प्रति.	नहीं	प्रति.		
1	प्राथमिक शाला	54	100. 00%	0	–	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	166	100.00%	0	–	166	100.00%
3	हाई स्कूल	244	100.00%	0	–	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	63	100.00%	0	–	63	100.00%

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला, हाई स्कूल तथा उच्चतर माध्यमिक शाला के 100% बालक/बालिका शौच के बाद हाथ धोते है।

14. शालागामी छात्र/छात्राओं के शौच के बाद हाथ किससे धोते है का विवरण

क्र.	शाला का नाम	शौच के बाद हाथ किससे धोते है					प्रति.	कुल विद्यार्थी	प्रति.
		साबुन	प्रति.	राख	प्रति.	पानी			
1	प्राथमिक शाला	46	85. 18%	5	9. 26%	3	5. 55%	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	144	86. 75%	17	10. 24%	5	3. 01%	166	100.00%
3	हाई स्कूल	235	96.31%	5	2.05%	4	1.64%	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	57	90. 48%	4	6. 35%	2	3. 17%	63	100.00%

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राथमिक शाला में 85.18% साबून, 9.26% राख, 5. 55% पानी से शौच के बाद हाथ धोते है। माध्यमिक शाला में 86.75% साबून, 10.24% राख, 3.01% पानी से हाथ धोते है। हाई स्कूल में 96.31% साबून, 2.05% राख तथा 1.64% पानी का इस्तेमाल करते है। हाई स्कूल के 90.48% साबून, 6.35% राख तथा 3.17% पानी से शौच के बाद हाथ धोते है।

16. शालागामी छात्र/छात्राओं के आंख/नाक/कान पूर्णतः स्वस्थ्य का विवरण :-

क्र.	शाला का नाम	आंख/कान/नाक पूर्णतः स्वस्थ्य						कुल विद्यार्थी	प्रति.
		हां	प्रति.	नहीं	प्रति.	नही तो बिमारी			
1	प्राथमिक शाला	53	98. 15%	1	1. 85%	0	0	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	162	97.59%	4	2.41%	0	0	166	100.00%
3	हाई स्कूल	242	99.18%	2	0.82%	0	0	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	63	100.00%	0	–	0	0	63	100.00%

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राथमिक शाला में 98.15%, माध्यमिक शाला में 97.59%, हाई स्कूल में 99.18% तथा उच्चतर माध्यमिक शाला में 100% बालक/बालिका का आंख/नाक/कान/पूर्णतः स्वस्थ्य है।

17. शालागामी छात्र/छात्राओं में गंभीर बिमारी (मलेरिया, डायरिया, चेचक, टी.बी. आदि) से पिड़ित का विवरण :-

क्र.	शाला का नाम	गंभीर बिमारी (मलेरिया, डायरिया, चेचक, टी.बी. आदि) से पीड़ित हुये है।				कुल विद्यार्थी	प्रति.
		हां	प्रति.	नहीं	प्रति.		
1	प्राथमिक शाला	3	5. 5%	51	94. 44%	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	21	12.65%	145	87.35%	166	100.00%
3	हाई स्कूल	25	10.25%	219	89.76%	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	16	25.40%	47	74.60%	63	100.00%

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राथमिक शाला में 5.5%, माध्यमिक शाला में 12.65%, हाई स्कूल में 10.25% तथा उच्चतर माध्यमिक शाला में 25.40% बालक/बालिका पूर्व में गंभीर बिमारी (मलेरिया, डायरिया, चेचक, टी.व्ही. आदि) से पीड़ित रहे है।

18. शालागामी छात्र/छात्राओं में गंभीर बिमारी से पीड़ितों की उपचार पद्धति का विवरण:-

क्र.	शाला का नाम	गंभीर बिमारी से पीड़ित छात्र/छात्राओं की उपचार पद्धति								कुल विद्यार्थी	प्रति.
		डाक्टर	प्रति.	घरेलू	प्रति.	झांड फूक	प्रति.	झोला छाप डाक्टर			
1	प्राथमिक शाला	1	1. 85%	1	1. 85%	1	1. 85%	0	–	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	17	10.24%	2	1.20%	0	–	0	–	166	100.00%
3	हाई स्कूल	24	9.84%	1	0.40%	0	–	0	–	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	15	7.53%	0	1.59%	0	–	0	–	63	100.00%

उपरोक्त सारणी के अनुसार बिमार बालक/बालिका प्राथमिक शाला में 1.85% डाक्टर, 1.85% घरेलू जबकि 1.85% झांड फूक से इलाज कराते है। माध्यमिक शाला में 10.24%

डॉक्टर, 1.20% घरेलू उपचार करते है। हाई स्कूल में 9.84% डाक्टर से उपचार कराते है। उच्चतर माध्यमिक शाला में 7.53% डाक्टर से 1.59% घरेलू उपचार कराते है।

19. शालागामी छात्र/छात्राओं के भोजन का विवरण :–

क्र.	शाला का नाम	भोजन						कुल विद्यार्थी	प्रति.
		शाकाहारी	प्रति.	मासांहारी	प्रति.	दोनो तरह	प्रति.		
1	प्राथमिक शाला	4	7. 41%	0	–	50	92. 59%	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	1	0. 62%	0	–	165	99. 40%	166	100.00%
3	हाई स्कूल	19	7.79%	0	–	225	92.21%	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	5	7. 94%	0	–	58	92. 06%	63	100.00%

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राथमिक शाला में 7.41% शाकाहारी, 92.59% दोनो तरह का भोजन करते है। माध्यमिक शाला में 0.62% शाकाहारी, 99.40% दोनों तरह का भोजन करते है। हाई स्कूल में 7.79% शाकाहारी, 92.21% शाकाहारी एवं मासांहारी दोनों तरह की भोजन करते है।

20. शालागामी छात्र/छात्राओं का मुख्य भोजन का विवरण :–

क्र.	शाला का नाम	मुख्य भोजन						कुल विद्यार्थी	प्रति.
		चावल	प्रति.	गेहूं	प्रति.	कोदो	प्रति.		
1	प्राथमिक शाला	54	100%	0	–	0	–	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	166	100.00%	0	–	0	–	166	100.00%
3	हाई स्कूल	244	100.00%	0	–	0	–	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	63	100.00%	0	–	0	–	63	100.00%

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला, हाई स्कूल एवं उच्चतर माध्यमिक शाला के 100% बालक/बालिका का मुख्य भोजन चावल है।

21. भोज्य पदार्थो का सेवन :–

क्र.	भोज्य सामग्री	प्रतिदिन															
		सुबह								रात							
		1		2		3		4		1		2		3		4	
		प्रा. शा.	प्रति.	मा.शा.	प्रति	हाई	प्रति	उ. मा.	प्रति	प्रा. शा.	प्रति	मा.	प्रति.	हाई	प्रति	उ. मा.	प्रति
1	दाल	34	63	107	64.45	122	50	36	57.14	20	37.3	59	35.54	108	44.26	20	31.74
2	रोटी	18	33	30	18.18	48	19.67	22	34.92	2	3.70	21	12.73	19	7.78	6	9.52
3	हरी संब्जी	30	55.55	74	44.85	125	51.22	35	55.55	19	35.18	70	42.16	71	29.09	21	33.33
4	अन्य सब्जी	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
5	दूध	5	9.26	8	4.85	10	4.09	3	4.76	2	3.70	4	2.42	12	4.91	10	15.87
6	अंड़ा	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—
7	मासाहा र	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

सप्ताह में एक दो दिन								माह में एक दो दिन							
1		2		3		4		1		2		3		4	
प्रा.शा.	प्रतिशत	मा.	प्रतिशत	हाई	प्रतिशत	उ.मा.	प्रतिशत	प्रा.शा.	प्रति	मा.	प्रतिशत	हाई	प्रतिशत	उ.मा.	प्रतिशत
—	—	—	—	14	5.73	7	11.11	—	—	—	—	—	—	—	—
16	29.63	74	44.57	98	40.16	27	42.86	12	22.22	32	19.39	50	20.49	6	2.46
5	9.26	22	13.25	48	19.67	7	11.11	—	—	—	—	—	—	—	—
35	64.81	105	63.25	212	88.88	44	69.84	19	35.18	61	36.74	32	13.11	19	30.75
22	40.74	46	27.88	98	40.16	28	44.44	8	14.82	85	51.20	86	35.24	22	34.92
20	37.03	114	69.09	108	44.26	34	53.97	35	64.81	31	18.79	100	40.98	24	38.09
10	18.52	63	38.18	73	29.92	8	12.70	33	61.11	76	46.06	129	52.86	38	60.31

वर्ष में विशेष आयोजन पर							
1		2		3		4	
प्रा.शा.	प्रतिशत	मा.	प्रति.	हाई	प्रति	उ.मा.	प्रति
—	—	—	—	—	—	—	—
006	11.11	9	5.45	29	11.88	2	3.17
—	—	—	—	—	—	—	—
—	—	—	—	—	—	—	—
17	31.48	23	13.85	38	15.57	—	—
20	37.03	21	12.65	36	14.75	5	7.94
11	20.37	27	16.26	42	17.21	17	26.98

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राथमिक शाला में अधिकतर प्रतिदिन 63 प्रतिशत सुबह व 37.03 प्रतिशत रात में छात्र/छात्राएं दाल का सेवन करते है। माध्यमिक शाला में अधिकतर प्रतिदिन 64.45 प्रतिशत सुबह व 35.54 प्रतिशत रात में छात्र/छात्राएं दाल का सेवन करते है। हाई स्कूल में अधिकतर प्रतिदिन 50 प्रतिशत सुबह व 44.26 प्रतिशत रात में छात्र/छात्राएं दाल का सेवन करते है। उच्चतर माध्यमिक शाला में अधिकतर प्रतिदिन 57.14 प्रतिशत सुबह व 31.74 प्रतिशत रात में छात्र/छात्राएं दाल का सेवन करते है।

प्राथमिक शाला में अधिकतर सुबह 33 प्रतिशत छात्र/छात्राएं रोटी का सेवन करते है। माध्यमिक शाला में अधिकतर 44.57 प्रतिशत छात्र/छात्राएं सप्ताह में एक दो दिन रोटी का सेवन करते है। हाई स्कूल में अधिकतर 40.16 प्रतिशत छात्र/छात्राएं सप्ताह में एक दो दिन रोटी का सेवन करते है। उच्चतर माध्यमिक शाला में अधिकतर 42.86 प्रतिशत छात्र/छात्राएं सप्ताह में एक दो दिन रोटी का सेवन करते है।

प्राथमिक शाला में अधिकतर सुबह 55.55 प्रतिशत छात्र/छात्राएं हरी सब्जी का सेवन करते है। माध्यमिक शाला में अधिकतर 44.85 प्रतिशत छात्र/छात्राएं सुबह हरी सब्जी का सेवन करते है। हाई स्कूल में अधिकतर 51.22 प्रतिशत छात्र/छात्राएं सुबह हरी सब्जी का सेवन करते है। उच्चतर माध्यमिक में अधिकतर 55.55 प्रतिशत छात्रा छात्राएं सुबह हरी सब्जी का सेवन करते है।

प्राथमिक शाला सारणी में प्राथमिक शाला में अधिकतर 64.81 प्रतिशत छात्र/छात्राएं सप्ताह में एक दो दिन अन्य सब्जी का सेवन करते है। माध्यमिक शाला में 63. 25 प्रतिशत, हाई स्कूल 88.88 प्रतिशत छात्र/छात्राएं सप्ताह में एक दो दिन अन्य सब्जी का सेवन करते है। प्राथमिक शाला में अधिकतर 40.47 प्रतिशत छात्र/छात्राएं सुबह दूध का सेवन करते है। माध्यमिक शाला में 51.20 प्रतिशत छात्र/छात्राएं माह में एक दो दिन दूर का सेवन करते है। उच्चतर माध्यमिक शाला में अधिकतर 44.44 प्रतिशत छात्र/छात्राएं दूध का सेवन करती है। प्राथमिक शाला में अधिकतर 64.81 प्रतिशत छात्र/छात्राएं अंडा का सेवन माह में एक दो दनि करते है। माध्यमिक शाला में 69.09 प्रतिशत छात्र/छात्राएं अंडे को सेवन सप्ताह में एक दो दिन करते है। हाई स्कूल में 44.26 प्रतिशत छात्र/छात्राएं अंडे का सेवन सप्ताह में एक दो दिन करते है। उच्चतर माध्यमिक शाला में 53.97 प्रतिशत छात्र/छात्राएं अंडे का सेवन सप्ताह में एक दो दिन करते है। प्राथमिक शाला में अधिकतर 61.11 प्रतिशत छात्र/छात्राएं माह में एक दो दिन मांसाहार का सेवन करते है। माध्यमिक शाला में 46.06 प्रतिशत, हाई स्कूल में 52.86 प्रतिशत एवं उच्चतर माध्यमिक शाला में 60.31 प्रतिशत छात्र/छात्राएं माह में एक दो दिन में मांसाहार का सेवन करते है।

22. शालागामी छात्र/छात्राओं में दिन में नाश्ता का विवरण :–

क्र.	शाला का नाम	दिन में नाश्ता कितने बार						कुल विद्यार्थी	प्रति.
		1 बार	प्रति.	2 बार	प्रति.	नाश्ता नही	प्रति.		
1	प्राथमिक शाला	51	94. 44%	3	5. 56%	0	–	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	75	45. 18%	57	34. 34%	34	20.48%	166	100.00%
3	हाई स्कूल	123	50.41%	33	13.52%	88	36.02%	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	45	71. 43%	6	9. 52%	12	19.04%	63	100.00%

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राथमिक शाला में 94.44% एक, 5.56% दो बार नास्ता करते है। माध्यमिक शाला में 45.18% एक, 34.34% दो बार एवं 20.48% बालक/बालिका नास्ता नहीं करते है। हाई स्कूल में 50.41% एक, 13.52% दो, 36.02% नास्ता नहीं करते है। उच्चतर माध्यमिक शाला के 71.43% एक, 9.52% दो बार तथा 19.04% बालक/बालिका नास्ता नहीं करते है।

23. **शालागामी छात्र/छात्राओं में मुख्यतः नाश्ता में आहार का विवरण :–**

क्र.	शाला का नाम	मुख्यतः किन चीजो का सेवन						कुल विद्यार्थी	प्रति.
		चावल	प्रति.	रोटी	प्रति.	चाय/ब्रेड	प्रति.		
1	प्राथमिक शाला	8	14. 81%	11	20. 37%	6	11. 11%	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	74	44.57%	13	7. 83%	45	27. 11%	166	100.00%
3	हाई स्कूल	72	29.51%	51	20.90%	33	13.52%	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	7	11. 11%	28	44. 44%	16	25. 40%	63	100.00%

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राथमिक शाला में 14.81% चांवल, 20.37% रोटी, 11. 11% चाय/ब्रेड/चिवड़ा आदि बालक/बालिका मुख्यतः नास्ते में सेवन करते है। माध्यमिक शाला 44.57% चांवल, 7.83% रोटी, 27.11% चाय/ब्रेड/चिवड़ा का मुख्यतः नास्ते में सेवन करते है। हाई स्कूल के 29.51% चांवल, 20.40% रोटी, 13.52% चाय/ब्रेड/चिवड़ा आदि का मुख्यतः नास्ते में सेवन करते है। उच्चतर माध्यमिक शाला के 11.11% चांवल, 44.44% रोटी, 25.40% चाय/ब्रेड/चिवड़ा का मुख्यतः नास्ते में सेवन करते है।

24. **शालागामी छात्र/छात्राओं में भोजन कितने बार करते है का विवरण :–**

क्र.	शाला का नाम	भोजन कितने बार करते है।								कुल विद्यार्थी	प्रति.
		1 बार	प्रति.	2 बार	प्रति.	3 बार	प्रति.	4 बार	प्रति.		
1	प्राथमिक शाला	–	–	30	55. 56%	24	44. 44%	0	0	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	–	–	107	64. 46%	59	35. 54%	0	0	166	100.00%
3	हाई स्कूल	3	1.23%	102	41.80%	139	56.97%	0	0	244	100.00%
4	उ.मा. शाला	2	3. 17%	33	52. 38%	28	44. 45%	0	0	63	100.00%

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि प्राथमिक शाला के 55.56% दो बार, 44.44% तीन बार भोजन करते है। माध्यमिक शाला के 64.46% दो बार, 35.54% तीन बार भोजन करते है। हाई स्कूल के 1.23% एक बार 41.80% दो बार 56.97% तीन बार भोजन करते है।

उच्चतर माध्यमिक शाला के 3.17% एक बार, 52.38% दो बार तथा 44.45% तीन बार बालक/बालिका भोजन करते है।

25. शालागामी छात्र/छात्राओं शालेय खेल कूद में भाग लेने का विवरण :-

क्र.	शाला का नाम	शॉलेय खेल कूद में भाग लेना				कुल विद्यार्थी	प्रति.
		हां	प्रति.	नहीं	प्रति.		
1	प्राथमिक शाला	40	74. 07%	14	25. 93%	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	110	66. 27%	56	33. 73%	166	100.00%
3	हाई स्कूल	144	59.02%	100	40.98%	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	39	61. 90%	24	38. 10%	63	100.00%

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राथमिक शाला के 74.87% बालक/बालिका शालेय खेल कूद में भाग लेते है। माध्यमिक शाला में 6.27%, हाई स्कूल में 59.02% एवं उच्चतर माध्यमिक शाला में 61.90% बालक/बालिका शालेय खेल कूद में भाग लेते है।

26. शालागामी छात्र/छात्राओं के द्वारा शाला में हिस्सा लेने वाले खेलो का विवरण :-

क्र.	शाला का नाम	शाला में हिस्सा लेने वाले खेलों के नाम					
		दौड़	प्रति.	क्रिकेट	प्रति.	कबड्डी	प्रति.
1	प्राथमिक शाला	18	33. 33%	—	—	16	29. 63%
2	माध्यमिक शाला	28	16. 87%	12	7. 29%	19	11. 44%
3	हाई स्कूल	13	5.33%	33	13.52%	29	11.88%
4	उ.मा.शाला	9	14. 28%	3	4. 76%	4	6. 35%

शाला में हिस्सा लेने वाले खेलों के नाम						कुल विद्यार्थी	प्रति.
खोखो	प्रति.	फुटबॉल	प्रति.	अन्य	प्रति.		
6	11. 11%	—	—	—	—	54	100.00%
31	18. 67%	13	7. 83%	7	4. 21%	166	100.00%
4	1. 64%	20	8.20%	8	3.28%	244	100.00%
8	12. 69%	13	20. 63%	2	3. 17%	63	100.00%

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राथमिक शाला के 33.33 दौड़, 29.63 कबड्डी, 11. 11 खो–खो में बालक/बालिकाओं ने हिस्सा लिया। माध्यमिक शाला के 16.87 दौड़, 7.29 क्रिकेट, 11.44 कबड्डी, 18.67 खो–खो, 7.83 फुटबॉल एवं 4.21 बालक/बालिकाओं में अन्य खेलों में हिस्सा लिया। हाई स्कूल के 5.33 दौड़, 13.52 क्रिकेट, 11.88 कबड्डी, 1.64 खो–खो, 8.20 फुटबॉल एवं 3.28 बालिका/बालिकाओं ने अन्य खेलों में हिस्सा लिया। उच्चतर माध्यमिक शाला के 14.28 दौड़, 4.76 क्रिकेट, 6.35 कबड्डी, 12.69 खो–खो, 20.63 फुटबॉल एवं 3.17 बालक/बालिकाओं ने अन्य खेलों में हिस्सा लिया।

27. शालागामी छात्र/छात्राओं के प्रतिदिन प्रातः भ्रमण का विवरण :–

क्र.	शाला का नाम	प्रतिदिन प्रातः भ्रमण					प्रति.
		हां	प्रति.	नहीं	प्रति.	कुल	
1	प्राथमिक शाला	24	44. 44%	30	55. 56%	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	88	53. 01%	78	46. 99%	166	100.00%
3	हाई स्कूल	119	18.77%	125	51.23%	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	39	61. 90%	24	38. 10%	63	100.00%

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला, हाई स्कूल एवं उच्चतर माध्यमिक शाला के क्रमशः 44.44%, 53.01%, 18.77% एवं 61.90% बालक/बालिका प्रतिदिन प्रातः भ्रमण करते है।

28. शालागामी छात्र/छात्राओं के द्वारा प्रतिदिन घर में कोई खेल खेलने का विवरण :–

क्र.	शाला का नाम	प्रतिदिन कोई खेल					प्रति.
		हां	प्रति.	नहीं	प्रति.	कुल वि.	
1	प्राथमिक शाला	43	79. 63%	11	20. 37%	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	125	75. 30%	41	24. 70%	166	100.00%
3	हाई स्कूल	156	63.93%	88	36.07%	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	23	36. 51%	40	63. 49%	63	100.00%

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला, हाई स्कूल एवं उच्चतर माध्यमिक शाला के क्रमशः 79.63%, 75.30%, 63.93% एवं 36.51% बालक/बालिकाये ही घर में प्रतिदिन कोई खेल खेलते है।

29. शालागामी छात्र/छात्राओं के द्वारा प्रतिदिन खेले जाने वाले खेल का विवरण :–

क्र.	शाला का नाम	प्रतिदिन खेले जाने वाले खेल के नाम																	
		दौड़	प्रति.	क्रिकेट	प्रति.	कबड्डी	प्रति.	खोखो	प्रति.	पिठुल	प्रति.	फुटबॉल	प्रति.	बैडमिंटन	प्रति.	अन्य	प्रति.	कुल वि.	प्रति.
1	प्राथमिक शाला	7	12. 96%	5	9. 26%	12	22. 22%	2	3. 70%	12	22. 22%	—	—	0	0	5	9. 26%	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	17	10. 24%	36	21. 68%	19	11. 44%	18	10. 84%	12	7. 23%	23	13. 85%	0	0	0	0	166	100.00%
3	हाई स्कूल	7	2.87%	55	22.54%	18	7.38%	7	2.87%	19	7.78%	26	10.24%	2	0. 82%	12	4. 91%	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	0	0	12	19. 05%	4	6. 35%	0	0	1	1. 58%	3	4. 77%	2	3. 17%	1	1. 58%	63	100.00%

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्राथमिक शाला के बालक/बालिकाओं के द्वारा घरों में प्रतिदिन सबसे ज्यादा खेले जाने वाला खेल कबड्डी 22.22% एवं पिठुल 22.22% है। वहीं

सबसे कम खेले जाने वाला खेल खो–खो 3.70% है। माध्यमिक शाला के बालक/बालिकाओं द्वारा घरों में सबसे ज्यादा खेले जाने वाला खेल क्रिकेट 21.68% है। जबकि सबसे कम खेले जाने वाला खेल पिठुल 7.23% है। हाई स्कूल के बालक/बालिकाओं द्वारा घरों में सबसे ज्यादा घर जाने वाला खेल क्रिकेट 22.54% है। जबकि सबसे कम खेले जाने वाला खेल बैडमिटंन 0.82% है। उच्चतर माध्यमिक शाला के बालक/बालिकाओं द्वारा घरों में सबसे ज्यादा घर में खेले जाने वाला खेल क्रिकेट 19.05% है। जबकि सबसे कम खेले जाने वाला खेल पिठुल व अन्य खेल 1.58% है।

30. शालागामी छात्र/छात्राओं के घर में पेयजल स्त्रोत का विवरण :–

क्र	शाला का नाम	घर में पेयजल स्त्रोत								कुल विद्यार्थी	प्रति.
		कुआं	प्रति.	नल	प्रति.	बोरिंग	प्रति.	अन्य	प्रति.		
1	प्राथमिक शाला	1	1. 85%	11	20. 37%	42	77. 78%	0	0	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	23	13. 85%	32	19. 28%	108	65. 06%	3	1. 81%	166	100.00%
3	हाई स्कूल	34	13.93%	24	10.64%	151	61.88%	33	13.52%	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	11	17. 46%	8	12. 70%	44	69. 84%	0	0	63	100.00%

उपरोक्त सर्वेक्षित सारणी से स्पष्ट है कि प्राथमिक शाला के बालक/बालिकाओं के घरों में पेयजल का स्त्रोत 1.85% कुआं, 20.37% नल, 77.78% बोरिंग है। माध्यमिक शाला के बालक/बालिकाओं के घरों में 13.85% कुआं, 19.28% नल, 65.06% बोरिंग तथा 1.81% अन्य पेयजल स्त्रोत है। हाई स्कूल के बालक/बालिकाओं के घरों में 13.93% कुआं, 10.64% नल, 61.88% बोरिंग एवं 13.52% अन्य पेयजल स्त्रोत है। उच्चतर माध्यमिक शाला के बालक/बालिका के घरों में 17.46% कुआं, 12.70% नल, 69.84% बोरिंग पेयजल हेतु स्त्रोत उपलब्ध है।

31. शालागामी छात्र/छात्राओं के घरों में शौचालय का विवरण :–

क्र.	शाला का नाम	घर में शौचालय					
		हां	प्रति.	नहीं	प्रति.	कुल वि.	प्रति.
1	प्राथमिक शाला	0	0	54	100%	54	100.00%
2	माध्यमिक शाला	33	19. 88%	133	80. 12%	166	100.00%
3	हाई स्कूल	63	25.82%	181	74.18%	244	100.00%
4	उ.मा.शाला	27	42. 86%	36	57. 14%	63	100.00%

उपरोक्त सर्वेक्षित सारणी से स्पष्ट है कि प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला, हाई स्कूल एवं उच्चतर माध्यमिक शाला के बालक/बालिकाओं के घरों में क्रमशः 0%, 19.88%, 25.82% एवं 42.86% शौचालय उपलब्ध है।

अध्याय – पांच
निष्कर्ष एवं सुझाव

निष्कर्ष :–

छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिला के अम्बिकापुर विकासखण्ड में तक शालागामी आदिवासी बालक/बालिकाओं के स्वास्थ्य एवं पोषण व पाठशाला में उपलब्ध सुविधाओं का अध्ययन वर्ष 2015–16 में किया गया। अनुसंधान अध्ययन के अनुसार निम्नालिखित निष्कर्ष प्राप्त हुआ।

स्माज का विकास नई पीढ़ि के द्वारा निर्धारित होती है। मानव जाति का विकास की पहली कारक उसका स्वास्थ्य, और उसके द्वारा प्राप्त शिक्षा है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के लिए बालक/बालिकाओं को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ्य होना अति आश्वयक है। इस हेतु केन्द्र एवं राज्य शासन द्वारा पाठशालाओं के माध्यम से बालका/बालिकाओं हेतु बहुत सी हितकारी योजनायें संचालित की जाती है। इसके बावजूद शालागामी बच्चों में स्वास्थ्य एवं शिक्षा का विकास ढीक से नहीं हो पा रहा है। इसका अध्ययन हेतु अनुसंधान कार्य आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान क्षेत्रीय इकाई अम्बिकापुर को सौपा गया था।

अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य तीन भाग है :–

1. कक्षा पहली से बारहवी तक अनुसूचित जनजाति छात्र–छात्राओं के स्वास्थ्य एवं पोषण की स्थिति का अध्ययन करना।
2. शालागामी आदिवासी बालक/बालिकाओं के अध्ययनरत् पाठशाला में स्वास्थ्य एवं पोषण हेतु उपलब्ध सुविधाओं का अध्ययन करना।
3. शालागामी आदिवासी बालक/बालिकाओं के स्वास्थ्य पोषण में सुधार हेतु आवश्यक सुझाव हेतु प्राप्त करना ।

इन उद्देश्यों की पूर्ती हेतु कक्षा पहली से बारहवी तक शालागामी आदिवासी बालक/बालिकाओं के स्वास्थ्य एवं पोषण व पाठशाला में उपलब्ध सुविधाओं के अध्ययन हेतु सरगुजा जिला के अम्बिकापुर विकासखण्ड के दो प्राथमिक, पांच पूर्व मा.शाला, तीन शासकीय

हाई स्कूल व दो शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला का चयन कर प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया गया। इस प्रकार दो प्राथमिक शाला के 54, चार माध्यमिक शाला के 171, तीन हाई स्कूल के 239 एवं दो उच्च माध्यमिक शाला के 2018 आदिवासी बालक/बालिकाओं का अध्ययन किया गया।

प्रतिवेदन तैयार करने हेतु प्राथमिक तथ्यों का संकलन अनुसूची के माध्यम से किया गया। अनुसूची भरे गये अनुसूचियों का सारणीयन एवं विश्लेषण पश्चात प्रतिवेदनर तैयार किया गया।

सर्वेक्षित कक्षा पहली के कुल 54 में से 8 (14.81 प्रतिशत) बालक/बालिकाओं का ऊचांई के अनुपात में वनज कम पाया गया। माध्यमिक शाला के 166 में से 21 (12.65 प्रतिशत), हाई स्कूल के 244 में से 22 (9.02 प्रतिशत) एवं उच्चतर माध्यमिक शाला के 63 मे से 6 (9.52 प्रतिशत) बालक/बालिकाओं का ऊंचाई के अनुपात में वनज कम पाया गया।

सर्वेक्षित प्राथमिक शाला के 100 प्रतिशत, माध्यमिक शाला के 99.40 प्रतिशत, हाई स्कूल के 100 प्रतिशत एवं उच्च.मा.शाला के सभी 100 प्रतिशत बालक/बालिका प्रतिदिन दांतों की सफाई करते है।

प्राथमिक शाला के 9.26 प्रतिशत एवं माध्यमिक शाला के 3.61 प्रतिशत बालक/बालिकाओं को छोड़कर हाई स्कूल एवं उच्चतर माध्यमिक शाला के सभी 100 प्रतिशत बालक/बालिका प्रतिदिन स्नान करते है।

सर्वेक्षित प्राथमिक शाला के 20.37 प्रतिशत, माध्यमि शाला के 19.28 प्रतिशत, हाई स्कूल 4.10 प्रतिशत एवं उच्चतर माध्यमिक शाला के 1.59 प्रतिशत बालक/बालिका साप्ताहिक नाखून नहीं काटते है। जबकि ज्यादातर बालक/बालिएं नाखून काटने के लिए नेल कटर का उपयोग करते हैं।

सर्वेक्षित प्राथमिक शाला के 66.67 प्रतिशत, माध्यमिक शाला के 52.41 प्रतिशत, हाई स्कूल के 47.95 प्रतिशत एवं उच्चतर माध्यमिक शाला के 58.73 प्रतिशत आदिवासी बालक/बालिका प्रतिदिन बालो की सफाई करते है जबकि कभी–कभी बालक/बालिका प्रतिदिन बालो की सफाई करने वालो की संख्या बहुत ही कम है। खाना खाने के बाद कुल्ला करने की प्रवृत्ति प्राथमिक शाला के 100 प्रतिशत, माध्यमिक शाला के 96.39 प्रतिशत, हाई

स्कूल 96.72 प्रतिशत एवं उच्चतर माध्यमिक शाला के 100 प्रतिशत बालक/बालिकाओं में पायी गयी है।

सर्वेक्षित प्राथमिक शाला, हाई स्कूल एवं उच्चतर माध्यमिक शाला के 100 प्रतिशत एवं माध्यमिक शाला के 98.80 आदिवासी बालक/बालिका खाना खाने से पहले हाथ धोते है जबकि जबकि ज्यादातर बालक/बालिकाएं हाथ धोने के लिए साबुन का उपयोग करते है।

सर्वेक्षित शालागामी सभी 100 प्रतिशत बालक/बालिका शौच के बाद हाथ धोते है। हाथ धोने के लिए ज्यादातर बालक/बालिका साबुन का उपयोग करते है, जबकि प्राथमिक शाला के 5.55 प्रतिशत, माध्यमिक शाला के 3.01 प्रतिशत , हाई स्कूल के 1.64 प्रतिशत एवं उच्चतर माध्यमिक शाला के 3.17 प्रतिशत आदिवासी बालक/बालिका हाथ धोने के लिए सिर्फ पानी का उपयोग करते है।

सर्वेक्षित प्राथमिक शाला के 98.15 प्रतिशत, माध्यमिक शाला के 97.59 प्रतिशत, हाई स्कूल के 99.18 प्रतिशत एवं उच्चतर माध्यमिक शाला के 100 प्रतिशत आदिवासी बालक/बालिकाओं का आंख/नाक/कान/ पूर्णतः स्वस्थ्य पाया गया।

सर्वेक्षित प्राथमिक शाला के 5.5 प्रतिशत, माध्यमिक शाला के 12.65 प्रतिशत, हाई स्कूल के 10.25 प्रतिशत एवं उच्चतर माध्यमिक शाला के 25.40 प्रतिशत बालक/बालिका ही गंभीर बिमारी (मलेरिया, डायरिया, चेचक, ढ़ीबो आदि) से कभी न कभी पीड़ित रहे है। जबकि गंभीर बिमारी से पीड़ित ज्यादातर बालक/बालिकाओं ने अपना उपचार डॉक्टर से करया है।

सर्वेक्षित प्राथमिक शाला के 92.59 प्रतिशत, माध्यमिक शाला के 99.40, हाई स्कूल के 92.21 प्रतिशत एवं उच्चतर माध्यमिक शाला के 92.06 प्रतिशत शालागामी बालक/बालिकाएं शाकाहारी एवं मासांहारी दोनो तरह का भोजन करते है, जबकि सभी 100 **प्रतिशत बालक/बालिकाओं का मुख्य आहार चांवल ही है।**

सर्वेक्षित प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला, हाई स्कूल एवं उच्चतर माध्यमिक शाला के क्रमशः 94.44 प्रतिशत, 45.18 प्रतिशत, 50.41 प्रतिशत एवं 71.43 प्रतिशत

बालक / बालिका दिन में 1 बार की नाश्ता करते है। जबकि ज्यादातर बालक / बालिकाओं का मुख्यतः नाश्ते में चांवल व रोटी का सेवन करते है।

सर्वेक्षित प्राथमिक शाला के 55.56 प्रतिशत, माध्यमिक शाला के 64.46 प्रतिशत हाई स्कूल के 41.80 प्रतिशत एवं उच्चतर माध्यमिक शाला के 52.38 प्रतिशत शालागामी बालक / बालिका दिन में दो बार भोजन करते है।

सर्वेक्षित प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला, हाई स्कूल तथा उच्चतर माध्यमिक शाला के क्रमशः 74.07 प्रतिशत, 66.27 प्रतिशत, 59.02 प्रतिशत तथा 61.90 प्रतिशत शालागामी बालक / बालिका शालेय खेल–खूद में भाग लेते है।

सर्वेक्षित प्राथमिक शाला के 33.33 प्रतिशत दौड़, माध्यमिक शाला के 18.67 प्रतिशत खो–खो, हाई स्कूल के 13.52 प्रतिशत क्रिकेट तथा उच्चतर माध्यमिक शाला के 20. 63 प्रतिशत बालक / बालिका फुटबाल खलते है।

सर्वेक्षित प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला , हाई स्कूल तथा उच्चतर माध्यमिक शाला के क्रमशः 44.44 प्रतिशत, 53.01 प्रतिशत, 18.77 प्रतिशत तथा 61.90 प्रतिशत शालागामी बालक / बालिका ही प्रतिदिन प्रातः भ्रमण करते है।

सर्वेक्षित प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला, हाई स्कूल तथा उच्चतर माध्यमिक शाला के क्रमशः 79.63 प्रतिशत, 75.30 प्रतिशत, 63.93 प्रतिशत तथा 36.51 प्रतिशत छात्र / छात्राएं प्रतिदिन अपने घर में कोई न कोई खेल खेलते है। जबकि ज्यादातर खेले जाने खेल क्रिक्रेट, दौड़, पिठुल व खो–खो है। प्राथिमक शाला, माध्यमिक शाला, हाई स्कूल तथा उच्चतर माध्यमिक शाला में क्रमशः 77.78 प्रतिशत, 65.06 प्रतिशत, 61.88 प्रतिशत तथा 69.84 प्रतिशत घरों में पेयजल हेतु बोटिंग की व्यवस्था पायी गयी ।

सर्वेक्षित प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला, हाई स्कूल एवं उच्चतर माध्यमिक शाला के क्रमशः 100 प्रतिशत, 80.12 प्रतिशत, 74.18 प्रतिशत एवं 57.14 प्रतिशत छात्र / छात्राओं के घरों में शौचालय नही पाया गया।

शालागामी छात्र / छात्राओं के अध्ययन के साथ–साथ अध्ययनरत् पाठशालाओं में स्वास्थ्य एवं पोषण हेतु उपलब्ध सुविधाओं का भी सर्वे अनुसूची के माध्यम से दो प्राथमिक

शाला, पांच माध्यमिक शाला, तनी हाई स्कूल, तथा दो उच्चतर माध्यमिक शालाओं का अध्ययन किया गया।

सर्वेक्षित प्राथमिक शाला, माध्यकि शाला, हाई स्कूल तथा उच्चतर माध्यमिक शाला में क्रमशः पेय जल की व्यवस्था है।

सर्वेक्षित 3 माध्यमिक शालाओं तथा 1 हाई स्कूल को छोड़कर सभी शालाओं में बिजली की व्यवस्था पायी गयी।

सर्वेक्षित सभी प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला, हाई स्कूल एवं उच्चतर माध्यमिक शाला में मूत्रालय एवं शौचालयों की व्यवस्था पायी गयी।

सर्वेक्षित सभी प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला, हाई स्कूल एवं उच्चतर माध्यमिक पाठशालाओं की स्वयं की भवन है। जबकि सभी भवन पक्के है।

सर्वेक्षित सभी पाठ शालाओं में खेल मैदान की व्यवस्था थी। लेकिन 1 माध्यमिक शाला के खेल मैदान, समतल नही था। हाई स्कूल के 1 मैदान समतल नही था। वही 3 खेल म्ैदान में बाउड्रीवाल नही पाया गया, एवं 1 उच्चतर माध्यमिक शाला के खेत मैदान में बाऊड्रीवाल नही पाया गया।

सर्वेक्षित प्राथमिक शाला एवं माध्यमिक शाला में मध्यान्ह भोजहन का संचालन महिला एवं स्व सहायता समूह के द्वारा किया जाता है। सभी पाठशालाओं में मध्यान्ह भोजन तैयार करने एवं परोसेन हेतु पर्याप्त वर्तन उपलब्ध है।

सर्वेक्षित प्राथमिक शाला एवं माध्यमिक शालाओं में किचन शेड की व्यवस्था है। माध्यमिक शाला के 1 शाला की सफाई सप्ताहिक तथा अन्य सभी शालाओं में प्रतिदिन होती है।

सर्वेक्षित सभी पाठशालाओं में मध्यान्ह भोजन का समय दोपहर 12.00 बजे–2.00 के मध्य है।

सर्वेक्षित 2 प्राथमिक शाला एवं 4 माध्यमिक शालाओं के सभी बच्चे मध्यान्ह भोजन में रूची होते है। जबकि 1 माध्यमिक शाला के छात्र/छात्राओं को भोजन रूचीकर नहीं लगाता है।

सर्वेक्षित 2 प्राथमिक शाला एवं 4 माध्यमिक शालाओं के छात्र/छात्राओं को मध्यान्ह भोजन से पूर्ण पोषण आहार प्राप्त होता है। जबकि 1 माध्यमिक शाला के छात्र/छात्राओं को पूर्ण पोषण प्राप्त नही हो रहा है।

सर्वेक्षित 1 माध्यमिक शाला को छोड़कर सभी पाठशालाओं में मध्यान्ह भोजन से बच्चों की उपस्थिति में सुधार हुआ है तथा छात्र/छात्राओं की स्वास्थ्य की स्थिति में भी सुधार हुआ है।

सर्वेक्षित किसी भी पाठशाला से मध्यान्ह भोजन से संबंधित कोई भी शिकायत प्राप्त नहीं हुई, तथा इन्हें खाने से कोई भी बच्चा बीमार नही हुआ।

सर्वेक्षित पाठशालाओं में उच्चाधिकारियों द्वारा समय–समय पर मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम का निरीक्षण किया जाता है।

सर्वेक्षण पाठशालाओं में पोषण एवं स्वास्थ्य संबंधी मध्यान्ह भोजन, नेत्र परीक्षण एवं राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम योजना संचालित है। 1 हाई स्कूल को छोड़कर सभी पाठशालाओं में इस योजना से बच्चों को लाभ प्राप्त हो रहा है। जबकि01 माध्यमिक शाला व 01 हाई स्कूल के बच्चे एवं उनके पालक को छोड़कर सभी संचालित योजनओं में रूची लेते है।

सर्वेक्षण पाठशालाओं में 50 प्रतिशत प्राथमिक शाला, 40 प्रतिशत माध्यमिक शाला एवं 33.34 प्रतिशत हाई स्कूल के बच्चों का नियमित स्वास्थ्य परीक्षण नहीं होना पाया गया। जबकि पाठशालाओं में 01 प्राथमिक शाला, 03 माध्यमिक शाला, 02 हाई स्कूल तथा 02 उच्चतर माध्यमिक शाला के बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण 12 माह में 1 बार हुआ है।

सुझाव

छत्तीसगढ़ राज्य के सरगुजा जिले के अम्बिकापुर विकासखण्ड में कक्षा 1 से 12 वीं तक शालागामी आदिवासी बालक/बालिकाओं के स्वास्थ्य एवं पोषण व पाठशाला में उपलब्ध सुविधाओं का अध्ययन वर्ष 2015–16 में किये गये अनुसंधान अध्ययन के आधार पर शालागामी आदिवासी बालक/बालिकाओं के स्वास्थ्य में सुधार करने व पाठशालाओं में उपलब्ध सुविधाओं का स्तर बढ़ाने के लिए सुझावों का उल्लेख निम्नानुसार है।

- ❖ शाला जाने हेतु जागरूकता बढ़ाना :– अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति बालक/बालिकाओं को रोजाना शाला जाने हेतु प्रोत्साहित करना व उनकी रूची बढ़ाना अति आवश्यक है।
- ❖ मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता बढ़ाना :– पाठशालाओं में बटने वाले मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता को बढ़ाना एवं शुद्ध साफ–सुरक्षित भोजन उपलब्ध कराना।
- ❖ स्वच्छता के प्रति जागरूक करना :– पाठशालाओं में शिक्षित बालक/बालिकाओं को समय–समय पर शारीरिक साफ–सफाई एवं प्राकृतिक स्वच्छता की शिक्षा दी जानी चाहिए।
- ❖ योगा प्रशिक्षण कराना :– पाठशालाओं में योग का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। योगा से मानसिक और शारीरिक दोनो तरह का विकास होता है। मन और तन दोनो स्वस्थ्य रहते है।
- ❖ पालको को जागरूक करना :– शासकीय पाठशालाओं में माह में कम से कम 1 बार पालको की बैठक कराना चाहिए एवं उन्हें स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के प्रति जागरूक करना चाहिए।
- ❖ पाठशालाओं में शुद्ध पेयजल की व्यवस्था :– पाठशालाओं में शुद्ध एवं साफ पेयजल की व्यवस्था वर्षभर होना चाहिए। ज्यादातर बिमारी अशुद्ध जल पीने से होती है।
- ❖ प्रतिदिन की जीवन शैली की शिक्षा देना :– पाठशालाओं में अध्ययरत बालक/बालिकाओं को प्रतिदिन की जीवन शैली सोने व उठने का समय, खाना खाने के पहले साबुन से हाथ धोना, शौच के बाद साबून से हाथ धोना, दांतो को साफ करना, नाखून काटना आदि उपयोग आने वाली बातो की शिक्षा प्रदान करना।

❖ पाठशालाओं में शौचालय बनाना :– पाठशालाओं में बालक एवं बालिकाओं हेतु मूत्रालय व शौचाल होना आवश्यक है, और उससे भी ज्यादा जरूरी है कि उनका रोज साफ–सफाई किया जाना चाहिए।

❖ बिजली की व्यवस्था :– पाठशालाओं में बिजली की व्यवस्था होना आवश्यक है।

❖ खेल मैदान की आवश्यकता :– पाठशालाओं में खेल–मैदान होना आवश्यक है खेल–खेलने से बालक/बालिकाओं के शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है एवं उनमें प्रतियोगिता की भावना बढ़ती है।

❖ योजनाओं का समुचित क्रियान्वयन :– जिला/ग्राम/पाठशालाओं में संचालित शासकीय योजनाओं का उचित ढंग `स क्रियांवयन किया जाना चाहिए तथा इनकी जानकारी एवं उपयोगिता उनके पालको को बताया जाना चाहिए।

❖ स्ंचालित योजनाओं का निरीक्षण किया जाना : – शासन द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं का संचालन किया जाता है लेकिन उसका क्रियान्वयन एवं प्रभाव उचित लोगो तक पहुच रहा है कि नही एवं उसका प्रभाव क्या पड़ रहा है इसकी जानकारी हेतु समय–समय पर उसका निरीक्षण किया जाना अति आवश्यक है।

❖ सामान्य बिमारियों की जानकारी देना :– बालक/बालिकाओं एवं उनके पालको को सामान्य बिमारीयों उनके कारणों एवं उनसे बचाव के तरीकों की जानकारी दी जानी चाहिए।

व्यक्ति तभी पूर्ण रूप से स्वस्थ्य माना जाता है, जब वो शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ्य हो पाठशालाओं में शिक्षित बालक/बालिकाओं का स्वास्थ्य एवं पोषण केवल आहार पर आधारित नहीं है। स्वास्थ्य खराब होने पर डॉक्टर से इलाज तो कराया जा सकता है। लेकिन उसे फिर से होने से नही रोका जा सकता। बिमार होने से बचा जा सकता है उसके लिए बालका/बालिकाओं एवं पालको को बचाव के तरीको का ज्ञान हो। ऐसा तभी संभव है जब इनकी जीवन शैली में बदलाव होगा। जिसके लिए व्यक्ति स्वयं उनके पालक शिक्षक पूरा समाज जिम्मेदार हैं इन्हें अपनी–अपनी भूमिका निभानी होगी।

अनुसंधान अधिकारी
आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण
संस्थान क्षेत्रीय इकाई
अम्बिकापुर, सरगुजा (छ.ग.)

Compt. Dt. 01.06.2019.